
VrajaviharaH



व्रजविहारः

Document Information



Text title : Vrajaviharah

File name : vrajavihAraH.itx

Category : vishhnu, devI, krishna

Location : doc_vishhnu

Proofread by : Aruna Narayanan

Translated by : Kanahaiyalal Mishra

Latest update : September 25, 2021

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 26, 2021

sanskritdocuments.org



VrajaviharaH

व्रजविहारः



कस्त्वं न्वत्र बलानुजस्त्वमिड किं मन्मन्दिशशुद्धया
बुद्धं तन्नवनीतकुम्भविवरे उस्तं कथं न्यस्यसि ।
कर्तुं तत्र पिपीलिकापनयनं सुमाः किमुद्धोषिताः
आला वत्सगतिं विवेक्तुमिति सञ्जल्पन्हरिः पातु वः ॥ १ ॥

शुर्णा तरिः सरिदतीव गभीरनीरा
आला वयं सकलमित्थमनर्थहेतुः ।
निस्तारभीजमिदमेव कृशोदरीणां
यन्माधव त्वमसि सम्प्रति कर्णधारः ॥ २ ॥

श्रीश्रीकृष्णो जयति जगतां जन्मदाता य पाता
हर्ता यान्ते हरति भजतां यश्च संसारभीतिम् ।
राधानाथः सजलजलदश्यामलः पीतवासा
वृन्दारण्ये विहरति सदा सखिदानन्दरूपः ॥ ३ ॥

ज्योतीरूपं परमपुरुषं निर्गुणं नित्यमेकं
नित्यानन्दं निम्बिलजगतामीश्वरं विश्वभीजम् ।
गोलोकेशं द्विभुजमुरलीधारिणं राधिकेशं
वन्दे वृन्दारकविधिलरव्रातवन्धाङ्घ्रिपद्मम् ॥ ४ ॥

येषां श्रीमदशोदासुतपदकमले नास्ति भक्तिर्नराणां
येषामाभीरकन्याप्रियगुणकथने नानुरक्ता रसज्ञा ।
येषां श्रीकृष्णलीलाललितगुणकथासादरौ नैव कर्णौ
धिक्षान्धिक्षान्धिगेतान्कथयति नितरां कीर्तनस्थो मृदङ्गः ॥ ५ ॥

वृन्दावने वृक्षलताप्रतानैर्वृन्दावनेशस्य विहारहेतोः ।
पुरा विधात्रा रचितान्सुकुञ्जगङ्गासु कृष्णः सड राधया सः ॥ ६ ॥
नवीनमेधोपमनीलदेहः सुपीतपट्टाम्बरयुग्मधारी ।

स्मिताननः कुण्डलवान्दिरीटी वंशीधरो मालतिमाव्यधारी ॥ ७ ॥

गोपीजनानन्दकरो मुरारिवृन्दामनेन्द्रो वनमाव्यशोभी ।

वंशीनिनादेन प्रजाङ्गनानां मनांसि सम्मोहितवान् स कामी ॥ ८ ॥

गोपीजना यमिड कामदृशा भजन्ते

यं भक्तिभाज षड् डेवलभक्तिभावैः ।

यं योगिनो लृष्टि धिया परिचिन्तयन्ति

तं डेवलं कमललोचनमाश्रयेऽडम् ॥ ९ ॥

वनेवने कुञ्जवने मुरारिः परिभ्रमन्त्राजति राधिका य ।

सडैव कुञ्जे रमते य राधया पायादपायाद्विड कृष्ण अेकः ॥ १० ॥

वृन्दारण्ये विडरति सदा वासुदेवो दयालु-

गोपस्त्रीभिः स्मरशतशरैर्भिन्नलुड्डामुकाभिः ।

गोपैर्बालैरपि सडयैः सार्द्धमानन्दयुक्तैर्योसौ

कृष्णः परमकरुणस्तं सदा चिन्तयेऽडम् ॥ ११ ॥

धति मुरादाबादनवासि कात्यायनगोत्रोद्भवपण्डितकन्डैयालालमिश्रकृत-

भाषाटीकासहितः प्रजविहारः सम्पूर्णाः ॥

छिन्दी भावार्थ -

अेक दिन प्रजविहार डे समय श्रीकृष्ण डिसी

गोपी डे गूड में प्रवेश करडे मङ्गन की खोरी कर

रडे थे । गोपरमाणी ने देभकर पूछा “तू कौन डै रे ?”

श्रीकृष्णने उत्तर दिया “मैं बलराम का छोटा भाठ

डूँ” । गोपिका ने पूछा “धस स्थान पर किसलिये

आया डै” । श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया “मैं अपना धर जान

धोभे से यडं आ गया” । गोपिका ने कडा “भला यहि

अैसा डी था तो मङ्गन डे धडे में डाय ड्यों डालते डो?”

श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया डि “धसमें पिपीलिका अर्थात्

खीटियें पडः गठ डैं सो उनको दूर डिधे देता डूँ” ।

गोपिका ने डिर पूछा “अच्छा ! बालक नीद में सो

रडे थे, उनको ड्यों जगायो ?” श्रीकृष्ण ने उत्तर

दिया “यड विचारने डे लिये डि सब बधडे कडं

थले गये डैं । “धस प्रकार जिन्डोंने अजविहार डे

समय गोपिकाओं से आनन्द किया है। वही कृष्ण
तुम्हारी रक्षा करें ॥ १ ॥

किसी दिन श्रीकृष्ण कर्णधार (भेवैये) डोकर
गोपियों को नदीपार करते थे, उस समय गोपिकायें
नदी को गम्भीर देखकर कड़ने लगीं कि “यह नौका
अत्यन्त ज़ुर्ग (पुरानी) है, नदी गहरे जल से परिपूर्ण है,
और हम सब आलस्य हैं, इस कारण जो कुछ देखती हैं
सब ही अनर्थ का लेतु है, किन्तु हे कृष्ण! हम क्षीणाङ्गियों का
अक यही निस्तार होने का कारण दीभता है, कि जो तुम इस
समय कर्णधार डोकर हमें पार करो” ॥ २ ॥

तीनों जगती सृष्टि, स्थिति और संभारके कारण,
भक्तजनों के संसारी भय को नाश करनेवाले, काले
आदल के समान साँवरे, पीतवस्त्रधारे श्रीकृष्ण सर्वदा
वृन्दावन के वनों में विहार करते हैं, वास्तव में वह
सख्यिदानन्दस्वरूप हैं ॥ ३ ॥

जो ज्योति स्वरूप हैं, गुणों से परे तथा नित्यानन्द
स्वरूप हैं, जो केवल परमपुरुष, निर्गुण अविनाशी
और भुवनों के अधीश्वर हैं, क्या ब्रह्मा, क्या शिव
सब ही जिसके चरणों की वन्दना करते हैं, वही
नारायण द्विभुज मुरलीधारण करनेवाले राधिकानाथ
रूप से वृन्दावन में वास करते हैं, मैं उनकी
गोलोकपति के चरण कमलों में प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

हरि सङ्कीर्तन के समय मृदङ्ग जो “धिक्तान् धिक्तान्,
धिक्तान्” प्रभृति ध्वनि करता है, उसका तात्पर्य
यह है; वह मृदङ्ग यह कडकर भेद प्रकाश करता
है कि “श्रीकृष्ण के चरणकमल में जिनकी भक्ति नहीं
है, जिनकी जिह्वा गोपरमणीगणों के प्रियपात्र हरि के
गुण कीर्तन करने में अनुरागी नहीं है, श्रीकृष्ण की
लीला सुनने को जिनके दानों श्रवण (कान) उत्साह
प्रकाश नहीं करते हैं, उनको धिक्कार है, धिक्कार है,

धिक्कार है “ ॥ ५ ॥

वृन्दावनपति श्रीकृष्ण के विहार करने को स्वयं
विधाता ने अनेक प्रकार के वृक्षलता से मनोरम कुञ्ज
बनाये हैं, उन्हीं सब कुञ्जवनों में श्रीकृष्ण राधा सहित
भ्रमण करते हैं ॥ ६ ॥

श्रीकृष्ण की देख नये बादल के समान श्याम है,
शोभायमान पीले वर्ण के रेशमीन वस्त्र पहने हुए हैं,
उनका वदन मन्द मुस्कान से विराजमान है, उनके
कानों में सुन्दर कुण्डल शोभायमान हैं, मस्तकपर
किरीट डाय में आंसुरी और गले में मालतीकी माला
पडी है, जैसे भगवान् शोभायमान होते हैं ॥ ७ ॥

गोपीजनों को आनन्द देनेवाले, वनमाला धारण
करनेवाले, वृन्दावनपति, कृष्ण विहार की वासना से
अंसी की ध्वनि कर अजरमणीगणों का मन मोह लिया
करते हैं ॥ ८ ॥

गोपिकागण कामदृष्टि से जिसका भजन करती हैं,
भक्त मनुष्यगण भक्तिभाव से जिसकी आराधना
करते हैं, योगीजन योगबल से जिसको चित्त में दर्शन
करते हैं मैंने उन्हीं कमलवोचन कृष्ण को आश्रय किया ॥ ९ ॥

जो वनवनके कुञ्जकुञ्ज में श्रीराधा के सङ्ग भ्रमण
और विहार करते हैं, केवल वही कृष्ण सम्पूर्ण
अपार्यों से हमारी रक्षा करें ॥ १० ॥

जो काम से आतुर हुए गोपबन्धुओं के सङ्ग
वृन्दावन में विहार करते हैं, कामभाण से जिनका लुब्ध
हृदय है, जो गोपबालकों के सङ्ग क्रीडा करते हैं, मैं
उन्हीं करुणामय कृष्ण का सदा ध्यान करता हूँ ॥ ११ ॥

मुरादाभादनवासि कात्यायनगोत्रोद्भवपण्डितकन्ठैयालालमिश्रकृत-
भाषाटीकासहितः प्रजविहारः ॥

Proofread by Aruna Narayanan



VrajaviharaH

pdf was typeset on September 26, 2021



Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

